P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-1* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गायन विधा ख्याल : एक अवलोकन

श्वेता खरे
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

सारांश

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रचलित विधाओं में ख्याल एक महत्वपूर्ण और अत्यधिक लोकप्रिय विधा है। इसकी लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि जहां कहीं भी शास्त्रीय गायन की चर्चा चलती है वहां खयाल विधा का स्वरूप में मस्तिष्क में उभर कर सर्वप्रथम आता है। ख्याल गायन में कल्पना का बड़ा महत्व रहता है क्योंकि यही कल्पना ही है जो खयाल को विविधता प्रदान करती है और एक कलाकार के गायन को दूसरे के गायन से भिन्न भी बनाती है। यह कलाकार की कल्पनाशीलता ही है जो अपने गायन से श्रोता को आनंद व रस के मोह पाश मैं बांधे रखता है। ख्याल में कल्पना को प्रदर्शित करने के कई माध्यम है जैसे – स्वर विस्तार के माध्यम से, लयकारी के माध्यम से, तानों के माध्यम से इत्यादि। यह सभी माध्यम मिलकर ही खयाल को सभी अन्य गायन शैलियों में अलग स्थान प्रदान करते हैं किंतु यह सभी माध्यमों का विकास शनै शनै समय के साथ साथ हुआ है जिसका उल्लेख आगे लेकर अंतर्गत किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : शास्त्रीय गायन शैली, ख्याल, कल्पना, घराना, अमीर खुसरो, सुल्तान हुसैन शर्की, सदारंग।

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत की अपनी एक गौरवपूर्ण पृष्ठभूमि रही है तथा अपनी इसी सुविकसित व सुपरिमार्जित अवस्था के कारण विश्व के अन्य देशों के संगीत से श्रेष्ठ माना जाता है । यद्यपि 13 वी शताब्दी के पूर्व संपूर्ण भारत में केवल एक ही संगीत पद्धति व्याप्त थी परंतु 13 वी शताब्दी के बाद भारतीय शास्त्रीय संगीत दो भागों में विभक्त हो गया प्रथम उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा दूसरा दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत और इस प्रकार भारतीय संगीत की उत्तरी व दक्षिणी नाम से दो अलग–अलग धाराओं का विस्तार होने लगा। .समय के साथ साथ उत्तर भारतीय संगीत में निरंतर परिवर्तन होते गए। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक की एक लंबी यात्रा करते हुए उत्तर भारतीय संगीत में अनेक प्रकार के उतार–चढ़ाव तथा परिवर्तन आए। जैसा की सर्वविदित है कि परिवर्तन संसार का नियम है वेशभूषा, रीति–रिवाज, भाषा, रहन–सहन इत्यादि सभी चीजों में समयानुसार परिवर्तन होते हैं। इसी परिवर्तन की श्रृंखला में ध्रुपद के बाद खयाल का उद्गम हुआ। जिस प्रकार प्रबंध आदि रचनाएं प्राचीन काल में गायी जाती थी उसी प्रकार समय के साथ धीरे–धीरे बाहरी संस्कृतियों के प्रभाव के कारण हमारी संस्कृति भी प्रभावित हुई जिससे संगीत में भी परिवर्तन आया इसी परिवर्तन के परिणाम स्वरूप प्रबंध से ध्रुपद तथा ध्रुपद से ख्याल का प्रादुर्भाव हुआ।

ख्याल शब्द से अभिप्राय

ख्याल के शाब्दिक अर्थ को विभिन्न शब्दकोश में भिन्न भिन्न अर्थों में बताया गया है किंतु संगीत जगत में ख्याल का शाब्दिक अर्थ कल्पना के रूप में अधिक लोकप्रिय है।

इस संबंध में डॉ शरद चंद्र श्रीधर परांजपे जी कहते हैं,'' ख्याल शब्द अरबी भाषा का है... इसका अर्थ कल्पना, विचार या तर्क है[1]।''

ख्याल शब्द के अर्थ पर विचार करते हुए आचार्य बृहस्पति ने कल्पना तथा तत्संबंधी अन्य अनेक अर्थों का उल्लेख किस कुछ इस प्रकार किया है–

''ख्याल शब्द का अर्थ विचार या कल्पना है। ख्याल शब्द ध्यान का अनुवाद है। राजस्थान में कवि कल्पना अथवा ऐतिहासिक घटना के आधार पर बनाए हुए चित्र ख्याल कहलाते हैं। चंग बजा कर लावणी गाने वाले उन गीतों को ख्याल कहते हैं जिनमें ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन होता है। बुरहानुद्दीन

जानम (16वी सदी का उत्तरार्ध) जैसे प्रसिद्ध सूफियों की ऐसी रचनाएं ख्याल कहीं गई जिनमें की पीर का चित्रण है।[2]

स्वर्गीय ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार – ''संगीत में ख्याल शब्द का अर्थ कल्पना और कल्पना परख संरचना दोनों होता है।[3]

कुछ विद्वान ख्याल का उद्‌गम हिंदी भाषा के खेल शब्द से मानते हैं जो कालांतर में खेल से ख्याल में परिवर्तित हो गया जिस के विभिन्न उदाहरण सूरदास के पदों में भी मिलते हैं –

''कूदी पड़े चढ़ी कदम ते तुम खेलत यह ख्याल।[4]''

भाषा के विचार से ख्याल शब्द के अनेक अर्थ है तथा विभिन्न शब्दकोश में ख्याल शब्द पुल्लिंग बताया गया है। यह अरबी और फारसी भाषा का शब्द माना गया है। इसमें आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि इसका जन्म मुस्लिम शासन काल से ही हुआ जब अरबी फारसी भाषा का प्रभुत्व था, शाही दरबार में भी और जनसाधारण में भी इसका विकास भी मुख्यतः मुसलमान कलाकारों के द्वारा ही किया गया, इसका नाम ख्याल इस तथ्य की भी पुष्टि करता है। इसी कारण कुछ विद्वान इसे फारसी भारतीय मिश्रित गायन शैली कहते हैं।

इस प्रकार ख्याल शब्द का अर्थ कल्पना, भावना, ध्यान, विचार, इत्यादि है जिसमें से कल्पना को ही इसका स्थूल अर्थ बताया जाता है। कल्पना शक्ति जितनी तीव्र होगी उतनी ही कलाकार की कला उत्कृष्ट होगी। अतः इस विधा का नाम इसके शैलीगत शिल्प या तकनीक के कारण ही पड़ा होगा।

ख्याल शब्द के सभी अर्थों का संबंध कल्पना अथवा विचार से होने के कारण कुछ विद्वानों ने ख्याल शब्द की उत्पति का संबंध खेल से भी माना है जो बाद में अपभ्रंश होकर लोग भाषाओं में ख्याल कहा जाने लगा। उत्तर भारत के ग्रामों में ख्याल शब्द का प्रयोग अनेक प्रकार की संगीत प्रधान नाटक तथा गेय प्रधान विधाओं के लिए किया गया दिखाई पड़ता है। लोक परंपरा में गाए जाने वाले ख्याल विविध प्रकार के होते हैं जैसे माच के ख्याल, तुर्रा कलंगी के ख्याल, कुचामनी ख्याल, नौटंकी ख्याल, मेवाड़ी ख्याल, बैठक के ख्याल, जयपुरी, दंगली ख्याल इत्यादि। इनमें से कुछ का प्रचार ब्रज में और कुछ का राजस्थान की ओर अधिक है। इनमें से कुछ मैं अभिनय कुछ में नृत्य गान और कुछ में केवल गायकी की प्रधानता मिलती है। गायकी प्रधान ख्यालों में से कुछ इस प्रकार हैं – जयपुरी ख्याल, दंगली ख्याल, बैठक के ख्याल इत्यादि। ख्याल शैली में जहां करुणा व श्रृंगार जैसे कोमल रसों की अभिव्यक्ति संभव है वहां वीर रस जैसे कठोर तथा शांत रस जैसे गंभीर रसों की भी अभिव्यक्ति की जा सकती है। इस प्रकार गायक ख्याल शैली में अपने ख्याल अर्थात विचार, कल्पना, भावना अनुभूति आदि को गायन में उतार पाने में पर्याप्त रूप से समर्थ रहता है। ख्याल का एक अर्थ ध्यान भी गायक के अंतर मन की भावना से संबंध रखता है। भावना शब्द भी खयाल के अर्थ के रूप में प्रचलित है। गायक के हृदय में जो भावनाएं उठती हैं उनका उसके गायन से बहुत गहरा संबंध रहता है क्योंकि हृदय में उठने वाली भावनाएं वाणी से प्रकट होती हैं और वाणी पर संबंध गान व साहित्य दोनों से ही बहुत गहरा रहता है। इस ख्याल गायन शैली में नियम के होते हुए भी गायक अपनी कल्पना के सहारे स्वरों को अनेक प्रकार से प्रयोग में लाने के लिए पूर्ण रूप से स्वतंत्र रहता है।

ख्याल गायकी : उद्‌भव और विकास

ऐतिहासिक दृष्टि से ख्याल के उद्‌गम स्रोत एवं विकास पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि इस पर भी विभिन्न विचारकों तथा विद्वानों में मत अंतर पाया जाता है।

ठाकुर जयदेव सिंह के मतानुसार, ''ख्याल गायन पूर्ण रूप से भारतीय है। हिंदुस्तानी संगीत कलाकारों को दृष्टि में रखते हुए इनके बंदिशों को देखा जाए तो मालूम होगा कि इनका विकास विभिन्न शैली पर विशेष जोर देते हुए साधारणीय शैली पर आधारित है । इसके गायन में रूपकालापति का अनुसरण किया जाता है।[5]''

भारत में गंधर्व और गान के तीन तत्व कहे जो स्वर ताल और पद हैं। प्रबंध भी इन तीनों के संयोग का परिणाम था। इसी परंपरा में ध्रुपद का विकास हुआ। प्रबंध के 6 अंगों में स्वर, ताल और पद अंग मुख्य थे। ख्याल की रचना भी इन्हीं तीनों से हुई है।[6]

ख्याल गीत प्रकार का उल्लेख सर्वप्रथम महाराष्ट्र के संत नामदेव द्वारा तेरहवीं शताब्दी में किया गया। जिसमें नामदेव ने अभंग के अंतर्गत ख्याल का उल्लेख किया है जो खुसरो के समकालीन थे। संत नामदेव का अभंग इस प्रकार है–

राजसी ताजसी जे गाणा, तोडी ताल मोडी मान ।।
खयाल गाए कंप स्वर, रिझवी दात्या यह अंतर।।[7]

उस्ताद चांद खान साहब के अनुसार, ''ख्याल के अविष्कारक हजरत अमीर खुसरो हैं।[8]''

श्री के. जी. गिंडे जी ने कव्वाली को ही खयाल का जन्मदाता मानते हुए लिखते हैं कि, '' ऐसा प्रतीत होता है कि सदारंग अदारंग से बहुत पहले खयाल का अस्तित्व था। अनुमान किया जाता है की कव्वाली जो हिंदुओं के भजन के समान है और अमीर खुसरो के द्वारा आविष्कार की गई एवं लोकप्रिय बनाई गई ख्याल का मूल थी।[9]

कुछ विद्वान कव्वाली से ख्याल का जन मानते हैं तो कुछ ध्रुपद से ख्याल की उत्पत्ति मानते हैं।[10]

समय–समय पर कई विद्वानों ने अमीर खुसरो को ख्याल के प्रवर्तक मान्य के संबंध में मत दिया है जिसमें कि कोई संदेह नहीं है क्योंकि अमीर खुसरो ख्याल के प्रथम नायक रहे हैं। अमीर खुसरो के पश्चात जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की ने भी ख्याल के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इसी संबंध में श्रीमती सुलोचना यजुर्वेदी जी का कहना है कि, ''हुसैन शाह शर्की महान संगीत मर्मज्ञ थे। यही ख्याल के आविष्कारक थे और इन्हानें अनेक ख्यालों की रचना की।'' वह आगे लिखती हैं कि, ''खुसरो की परंपरा जौनपुर में पली।[11]''

ठाकुर जयदेव सिंह के अनुसार, ''चौदहवीं शताब्दी में जौनपुर के शर्की नवाबों ने काफी हद तक इस को प्रोत्साहन दिया है।[12]''

स्पष्ट है कि हुसैन शाह शर्की का भी ख्याल के प्रचार में अविस्मरणीय योगदान रहा और यह भी संभव है कि इन्होंने ख्याल को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए उसमें कुछ आवश्यक परिवर्तन भी किया हो। जो भी हो 17वी शताब्दी के अंत तक ख्याल गायन को निम्न कोटि का गायन माना जाता था और शिष्ट समाज में जो ध्रुपद को ही सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता था।

ख्याल के उत्कर्ष एवं लोकप्रियता की दृष्टि से मुहम्मद शाह रंगीला (1719–1748) का समय सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। वह स्वयं कला प्रेमी शासक था। उस के दरबार में संत, फकीर, ध्रुपदिए, कवित्व ख्याल गाने वाले सभी प्रकार के कलाकार थे। इन्हीं में से दो कलाकारों सदारंग अदारंग ने खयालों की रचना की। मोहम्मद शाह रंगीला के समय में इन दोनों प्रतिभाशाली कलाकारों के कारण ही ख्याल गायकी गायन शैली के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

आतः सभी मतों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि किसी व्यक्ति विशेष द्वारा पूर्णत: नवीन परंपरा अथवा शैली का आविष्कार कर के प्रचार में लाया जाना तर्कसंगत नहीं है। ख्याल शैली के रूप में पूर्व शैलियों का ही विकास हुआ है। जिसमें व्यक्ति विशेष का योगदान केवल तत्कालीन शैलियों को परिष्कृत या परिवर्धित करना ही है । इस प्रकार देखा जाए तो अमीर खुसरो, हुसैन शाह शर्की, सदारंग आदि व्यक्तियों को ख्याल के प्रचारक यह तत्कालीन शैली में कुछ नवीन प्रयोग करने वाले प्रयोग धर्मी के रूप में ही माना जाना अधिक उचित होगा।

खयाल के प्रकार

ख्याल के दो प्रकार प्रचलित हैं–

1) विलंबित ख्याल अथवा बड़ा ख्याल
2) छोटा ख्याल अथवा द्रुत ख्याल

विलंबित ख्याल अर्थात बड़ा ख्याल विलंबित गति में गाया जाता है। लय विलंबित होने के कारण समय ज्यादा लगता है इसीलिए इसे बड़ा ख्याल कहा जाता है। बड़े ख्याल के दो भाग होते हैं – स्थाई और अंतरा। बड़ा ख्याल तिलवाड़ा, झुमरा, एक ताल आदि तालों में गाया जाता है। छोटा ख्याल अर्थात द्रुत खयाल मध्य लय में निबंध होते हैं तथा गायन में भी समय कम लगता है इसीलिए इसे छोटा ख्याल कहते हैं। छोटे ख्याल के भी दो भाग होते हैं – स्थाई और अंतरा। छोटे ख्याल की प्रकृति चंचल और श्रृंगार रस से परिपूर्ण होती है। छोटा ख्याल तीनताल, एक ताल, झप ताल, रूपक आदि तालों में गाया जाता है।

ख्याल की विशेषता है कि इसमें खटके, मुर्की, कण, मींड आदि का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया जाता है। ध्रुपद की तुलना में ख्याल चंचल प्रकृति का है इसमें ध्रुपद जैसी गंभीरता नहीं होती है। पर बड़े ख्याल की लय विलंबित होने के कारण इसके कुछ अंश में ध्रुपद के समान ही गंभीरता नजर आती है जो ध्रुपद से ख्याल के विकास को सहज रूप से स्पष्ट करती है। खयाल में कल्पनाशीलता के लिए ज्यादा गुंजाइश होती है जिससे भावाभिव्यक्ति में भी सहायता मिलती है।

ख्याल में गीतों की भाषा प्रायः उत्तर भारत की भाषा होती है। अधिकांश पद ब्रज, अवधि, मारवाड़ी, पंजाबी, भोजपुरी, मिश्रित हिंदी आदि भाषाओं में पाए जाते हैं। विषय वस्तु में भी प्रायः लौकिक जीवन का वर्णन होता है जैसे नायक नायिका के प्रेम का वर्णन, ईश्वर उपासना, राज स्तुति, संगीत के सौंदर्य का वर्णन, ऋतु का वर्णन, विवाह प्रसंग आदि।

मध्यकाल में अनेक भक्त कवि हुए हैं जिन्होंने ख्याल की बंदिशों में श्रृंगार के साथ भक्ति भाव को प्रस्तुत किया जिनमें प्रमुख हैं – मीरा, सूरदास, कबीर दास, तुलसीदास इत्यादि। सदारंग, अदारंग, मनरंग, हररंग आदि अनेक प्रसिद्ध संगीतज्ञ की भी रचनाएं हमें मिलती हैं। खयाल में ताल संगत वाद्य के रूप में तबले का और स्वर संगत वाद्य के रूप में तानपुरे का प्रयोग किया जाता है।[13]

ख्याल गायकी के विकास में विभिन्न घरानों और कलाकारों का बड़ा योगदान रहा है जिनमें ग्वालियर घराना, दिल्ली घराना, आगरा घराना, जयपुर घराना, किराना घराना, और पटियाला घराना रामपुर सहसवान घराना, अतरौली घराना का नाम प्रमुख है। इन घराने से संबंधित अनेक कलाकार ख्याति प्राप्त कर चुके हैं जिनमें नत्थन पीर बक्स, हद्दू खां, निसार हुसैन खां, बालकृष्ण बुवा ,विष्णु दिगंबर पलुस्कर, ओमकारनाथ ठाकुर, रहमत खां, फैयाज खां, उस्ताद अब्दुल करीम खां, केसरबाई, गंगूबाई, भीमसेन जोशी, जसराज, बड़े गुलाम अली खां, सलामत अली नजाकत अली, किशोरी अमोनकर, राजन साजन मिश्र, इत्यादि का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।[14]

अध्ययन का उद्देश्य

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की ख्याल शैली धीरे–धीरे समय के साथ विभिन्न परिवर्तनों व उतार–चढ़ाव को आत्मसात करते हुए वर्तमान समय में लोकप्रियता व प्रसिद्धि के शीर्ष पायदान पर विराजमान है। अतः इस लेख का मुख्य उद्देश्य लगभग 400 वर्ष पुरानी खयाल परंपरा के विकास के मुख्य बिंदुओं पर एक दृष्टि में प्रकाश डालना है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत लेख के लेखन के लिए उपलब्ध साहित्य का अवलोकन किया गया है। इसमें प्रमुख रूप से पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की सहायता ली गई है।

संकल्पना तथा परिकल्पना

प्रस्तुत लेख के मूल में यही संकल्पना है कि ख्याल नामक शास्त्रीय गायन शैली से संबंधित समस्त पहलुओं को संक्षिप्त किंतु उपयोगी तरीके से एक स्थान पर एकत्रित किया जा सके ।

अनुसंधान रेखा चित्र

प्रस्तुत लेख के लेखन में सिद्धांत विधि का उपयोग किया गया है जिसका स्त्रोत अनेक विश्वसनीय स्तर की पुस्तकें, पत्रिकाएं तथा ऑनलाइन वेबसाइट्स है।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि हिंदुस्तानी संगीत की प्रमुख गायन विधाओं के रूप में

वर्तमान काल में खयाल पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित व प्रसिद्ध हो चुकी है। इस गायन शैली के इस स्वरूप के निर्मित होने का कारण यही प्रतीत होता है कि अपनी सभ्यता के परिवर्तन के साथ–साथ समय–समय पर विदेशी सभ्यताओं का प्रभाव पड़ने के कारण इस शैली पर अनेक पीढ़ियों अनेक शैलियों व अनेक सभ्यताओं का रंग आ गया कल्पना सौंदर्य की स्वतंत्रता के कारण विस्तार क्षेत्र भी बढ़ गया। इसमें प्राचीन शैलियों की विशेषताएं तो मिलती ही है साथ ही साथ ध्रुपद, धमार ,ठुमरी, टप्पा, तराना, भजन आदि शैलियों का भी कुछ विशेषताएं अंश मात्र में इसमें प्राप्त होती हैं जैसे ध्रुपद धमार की बोल बाट, लयकारी तथा नोम तोम आलाप, टप्पे की छोटी–छोटी ताने, ठुमरी की बोल बनाव, तराने की द्रुत लय, सरगम तथा बोलो का काम, भजन की भावभिव्यक्ति आदि सभी का मिश्रण किया शैली में प्राप्त होता है जिसके कारण इसकी लोकप्रियता सर्वाधिक है। वर्तमान समय में घरानों के माध्यम से ही ख्याल गायन का परिरक्षण हो पा रहा है जिनके परिणाम स्वरूप न केवल ख्याल गायन को संरक्षण भी प्राप्त हो रहा है बल्कि उसके विकास का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रांजपे, डॉ शरद चंद्र श्रीधर, संगीत बोध, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी 2004*
2. *बृहस्पति, आचार्य, मुसलमान और भारतीय संगीत, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1974*
3. *शर्मा, डॉ दीपक, ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी, राधा पब्लिकेशंस 2014*
4. *पांडे, आशा, मध्यकालीन संगीत शैलियों का उद्भव और विकास, निर्मल पब्लिकेशंस 20027*
5. *यजुर्वेदी, सुलोचना, खुसरो तानसेन तथा अन्य कलाकार, राजकमल प्रकाशन दिल्ली 1974*
6. *गर्ग, लक्ष्मी नारायण निबन्ध संगीत, हाथरस संगीत कार्यालयए 1989*
7. *देवधर, डी. आर. संगीत कला विहार, महाराष्ट्र गंधर्व निकेतन ब्राह्मणपुरी मिराज, मार्च 1975*

पाद टिप्पणी

1. *संगीत बोध – डॉ शरद चंद्र श्रीधर परांजपे – पृ –115*
2. *मुसलमान और भारतीय संगीत – आचार्य बृहस्पति – पृ –112*
3. *ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी – डॉ दीपक शर्मा – पृ –3*
4. *संगीत कला विहार – जून 2011 – पृ – 32*
5. *संगीत कला विहार – 1975 – पृ –26*
6. *संगीत ख्याल अंक जनवरी–फरवरी 1976 –पृ –11*
7. *संगीत कला विहार – अप्रैल 1975 –पृ –171*
8. *संगीत ख्याल अंक जनवरी–फरवरी 1976 –पृ –10*
9. *संगीत – जून 1974 – पृ –10*
10. *मध्यकालीन संगीत शैलियों का उद्भव और विकास – आशा पांडे –पृ –97*
11. *खुसरो तानसेन तथा अन्य कलाकार – सुलोचना यजुर्वेदी –पृ –64*
12. *संगीत ख्याल अंक जनवरी–फरवरी 1976 –पृ –70*
13. *संगीत कला विहार – जून 2011 – पृ –36*
14. *संगीत बोध – डॉ शरद चंद्र श्रीधर परांजपे – पृ –116–117*